राजभवन में आयोजित रंगाली बिहू कार्यक्रम में

माननीय राज्यपाल श्री गुलाब चन्द कटारिया के अभिभाषण का प्रारूप

दिनांक 17 अप्रैल 2024, बुधवार	**समय : 04.30 PM**	**स्थान : राजभवन, गुवाहाटी**

नमस्कार!

आप सभी को रंगाली बिहू और असमिया नववर्ष की हार्दिक बधाई।

इस अवसर पर राजभवन में आप सभी को संबोधित करते हुए मुझे बहुत प्रसन्नता हो रही है। यह मेरे लिए हर्ष की बात है कि आप सभी के साथ रंगाली बिहू का आनन्द लेने का अवसर प्राप्त हुआ है।

मुझे खुशी है कि राजभवन, असम रंगाली बिहू उत्सव के आयोजन की स्वस्थ परंपरा शुरू हुई है। मैं समझता हूं ऐसे कार्यक्रम के माध्यम से हम राजभवन के कर्मचारियों, उनके बच्चों और परिवारजनों के बीच प्रेम और सौहार्द को बढ़ावा दे सकेंगे। इसके अलावा हम अपने बच्चों को अपने देश की समृद्ध लोक कला, संस्कृति और विरासत के प्रति जागरूक कर सकेंगे।

मित्रो,

रंगाली बिहू असम का पारंपरिक और सांस्कृतिक उत्सव है, जो खुशी और प्रेम की प्रचुरता से भरा है। असमिया कैलेण्डर के अनुसार रंगाली बिहू नववर्ष के आगमन का प्रतीक है। यह छोटे-बड़े हर उम्र के लोगों के मन में एक नई उम्मीद और ऊर्जा का संचार करता है।

यह असमिया नव-वर्ष के साथ वसंत ऋतु का भी स्वागत करता है। यह प्रकृति की उदारता के प्रति आभार व्यक्त करने का अवसर प्रदान करता है। रंगाली बिहू प्रकृति और मनुष्य के बीच नैसर्गिक प्रेम का प्रतीक है।

बिहू मूल रूप से कृषि आधारित त्योहार है। कृषक-जीवन की छोटी-छोटी खुशियों को सहज भाव से बिहू गीतों में देखने को मिलता है। फसलों की बुआई से लेकर कटाई तक की तमाम अनुभूतियाँ बिहू गीतों में चित्रित होती हैं। चारों तरफ ढोल, पेपा और गगना की स्वर लहरी गूंजने लगती है।

मित्रो,

हमारा असम एक खूबसूरत प्रदेश है। यह प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से भी सम्पन्न रहा है। यहां सदियों से विभिन्न समुदायों के लोग आपसी सद्भाव के साथ रहते आ रहे हैं।

इसी कारण असम, विभिन्न जन-समुदायों की मिलनभूमि कहलाता है। यहां की विभिन्न जातियां-उपजातियां अपनी सामाजिक और धार्मिक मान्यताओं, भाषा, साहित्य एवं परंपराओं को अक्षुण्ण रखते हुए एकजुट होकर रहते हैं।

लोक साहित्य की दृष्टि से असम बहुत समृद्ध है। बिहू असम का ही नहीं, बल्कि विश्व का प्रसिद्ध लोकनृत्य है। असमिया संस्कृति भारत की संस्कृति का एक अभिन्न अंग है, पर इसकी अपने रीति-रिवाज, आचार-व्यवहार, रहन-सहन, खान-पान, परंपरा आदि भारत की अन्य संस्कृति से अलग और विशेष है।

रंगाली बिहू असम की पारंपरिक संस्कृति और असमवासियों की जीवन शक्ति के सर्वश्रेष्ठ रूप का दिग्दर्शन कराते हैं। रंगाली बिहू भी एक भारत श्रेष्ठ भारत की भावना को प्रतिबिम्बित करता है। मुझे खुशी है कि यहां के लोग अपनी समृद्ध संस्कृति और गौरवशाली परंपराओं को पीढ़ी-दर-पीढ़ी संभाल कर रखे हुए हैं।

यह त्योहार केवल संस्कृति का उत्सव नहीं है, बल्कि ये सबको जोड़ने और मिलकर आगे बढ़ने की प्रेरणा भी देता है। यह समुदाय के लोगों को एकजुट करने और भाईचारे की भावना को बढ़ावा देने का अवसर प्रदान करता है। महिलाओं के बालों में सजे कपो फूल, मेखला चादर, पेपा, गगना और असमिया 'गामोछा' में भी यही भावना प्रदर्शित होती है।

इसी भावना के साथ मैं पुनः आप सभी को रंगाली बिहू की बहुत-बहुत बधाई।

धन्यवाद।

जय हिन्द।